Photo

श्री १०८ श्री भगवंतराय सिंह जू देव भवानी सिंह
को
पान का बीड़ा दे रहे हैं

कैसी भई तोहि तों हठीले हनुमान वीर,
पनको पलैया तैं जनैया जन-मन को
भ्राता हरिदासन को, त्राता सरनागत को
प्रभु-गुन ज्ञाता प्राण-दाता लछिमन को
- भगवंतराय

दान गयो दुनी से गुमान पुर बासिन को
गुनिन के गाँठिन सों मानिक छूटिगो
जूझे भगवंत जूके धरम धरासों गयो
सूर्य के सिंगारन से सेत ऐसो फूटिगो
- भूधर

' मल्ल ' कहैं आजु सब मंगन अनाथ भये
आजुही अनाथन को करम सब फूटिगो
भूप भगवंत सुरलोक को पयान कियो
आज कवि गनन को कलपतरु टूटिगो
- मल्ल

ह्वै गयो फकीर कमरुद्दीखान सो उजीर
गरे डारि डोरा अपकीरति की सेलही को
थाह लै लै थकि गो मलाह लौं दिली को कंत
पावत न अंत भगवंत की दलेली को
- अज्ञात

महाबली भगवंत कंठ कवि कहै याते
तोही पै रही है आज लाज हिन्दू पद की
- कंठ